Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

महेश्वर में सांस्कृतिक पर्यटन की संभावनाएँ: धरोहर संरक्षण और सांस्कृतिक पुनरुत्थान के संदर्भ में

श्रीमती कविता आर्य रामाणी* श्री पवन पाटीदार**

* सहायक प्राध्यापक, पूनमचंद गुप्ता वोकेशनल महाविद्यालय, खंडवा (म.प्र.) भारत
** सहायक प्राध्यापक, पूनमचंद गुप्ता वोकेशनल महाविद्यालय, खंडवा (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – भारत विविधताओं से परिपूर्ण एक ऐसा देश है जहाँ प्रत्येक क्षेत्र अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और धार्मिक पहचान रखता है। मध्यप्रदेश स्थित महेश्वर नगर, नर्मदा नदी के तट पर बसा एक ऐतिहासिक नगर है, जो अपनी राजवंशीय परंपराओं, धार्मिक स्थलों, तथा सांस्कृतिक धरोहरों के लिए जाना जाता है। रानी अहिल्याबाई होलकर की प्रशासनिक और सांस्कृतिक दूरदृष्टि ने महेश्वर को एक जीवंत सांस्कृतिक केंद्र के रूप में स्थापित किया।

आज जब पर्यटन केवल मनोरंजन का साधन न होकर सांस्कृतिक बोध, स्थानीय जीवनशैली के अनुभव और धरोहर संरक्षण का माध्यम बन गया है, तब महेश्वर की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ जाती है। सांस्कृतिक पर्यटन एक ऐसा क्षेत्र है जो पर्यटकों को न केवल स्थल भ्रमण कराता है बल्कि उन्हें उस भूमि की आत्मा से जोड़ता है। महेश्वर, अपनी स्थापत्य कला, घाटों, मंदिरों, उत्सवों और महेश्वरी वस्त्रों के कारण सांस्कृतिक पर्यटन की व्यापक संभावनाएँ प्रस्तुत करता है।

हालांकि, आधुनिकता की दौड़ में कई पारंपरिक सांस्कृतिक पहचान खतरे में हैं। धरोहर स्थलों की उपेक्षा, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में कमी, और स्थानीय कारीगरों की समस्याओं के चलते महेश्वर की सांस्कृतिक छवि धीरे-धीरे मंद पड़ रही है। ऐसे में सांस्कृतिक पर्यटन को एक पुनरुत्थानात्मक शक्ति के रूप में देखा जा सकता है, जो न केवल धरोहरों की रक्षा करेगा, बल्कि स्थानीय संस्कृति को जीवंत बनाए रखने में भी सहायक होगा।

यह शोध पत्र महेश्वर में सांस्कृतिक पर्यटन की संभावनाओं का अध्ययन करता है तथा यह विश्लेषण करता है कि कैसे धरोहर संरक्षण और सांस्कृतिक पुनरुत्थान को एक साथ जोड़ा जा सकता है। शोध का उद्देश्य है कि सांस्कृतिक दृष्टिकोण से पर्यटन की भूमिका का मूल्यांकन किया जाए, ताकि महेश्वर की संस्कृति को वैश्विक स्तर पर पहचान मिल सके।

महेश्वर की सांस्कृतिक विरासत –महेश्वर एक ऐसा नगर है जो इतिहास, संस्कृति और श्रद्धा की त्रिवेणी में प्रवाहित होता है। प्राचीन काल से ही यह नगर नर्मदा नदी के तट पर एक धार्मिक और सांस्कृतिक केंद्र के रूप में प्रसिद्ध रहा है। यह नगर न केवल स्थापत्य और कला की दृष्टि से समृद्ध है, बल्कि इसकी आत्मा लोकजीवन, परंपराओं और धार्मिक आस्थाओं में रची-बसी है।

1. **ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और होलकर वंश का योगदान–** महेश्वर का सबसे उज्ज्वल और समृद्ध काल 18वीं शताब्दी में रानी अहिल्याबाई होलकर के शासनकाल में आया। रानी अहिल्याबाई न केवल एक सक्षम प्रशासिका थीं, बल्कि उन्होंने धर्म, संस्कृति और समाज कल्याण के क्षेत्रों में भी अनूठा योगदान दिया। उन्होंने महेश्वर को अपनी राजधानी बनाया और यहाँ भव्य घाटों, मंदिरों और भवनों का निर्माण कराया। उनके प्रयासों से महेश्वर एक सांस्कृतिक केंद्र के रूप में स्थापित हुआ।

2. **स्थापत्य और कला की विरासत–** महेश्वर का किला, जो नर्मदा तट पर स्थित है, स्थापत्य का अनुपम उदाहरण है। यह किला न केवल सैन्य दृष्टि से महत्वपूर्ण था, बल्कि सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र भी रहा। अहिल्येश्वर मंदिर, राजराजेश्वर मंदिर और अनेक छोटे-बड़े मंदिर इस नगर की धार्मिक और स्थापत्य विशेषताओं को दर्शाते हैं। महेश्वर के घाट जैसे दअहिल्या घाट,पेशवा घाट, तिल्बानेश्वर घाट आदि भी धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं।

3. **धार्मिक महत्त्व–** महेश्वर का धार्मिक महत्व अत्यधिक है। यह नगर नर्मदा नदी के कारण पवित्र माना जाता है, और यहाँ प्रतिवर्ष हजारों श्रद्धालु नर्मदा स्नान, पूजा और अन्य धार्मिक अनुष्ठानों के लिए आते हैं। स्कंद पुराण तथा अन्य प्राचीन ग्रंथों में महेश्वर का उल्लेख है, जो इसकी धार्मिक प्राचीनता को सिद्ध करता है।

4. **लोक संस्कृति और परंपराएँ–** महेश्वर की लोक संस्कृति विविध रंगों से भरपूर है। यहाँ की लोक कथाएँ, लोकगीत, वाद्ययंत्र और पारंपरिक नृत्य यहाँ की जीवंत सांस्कृतिक परंपराओं को दर्शाते हैं। इसके अतिरिक्त, यहाँ की भाषा, पहनावा और खान-पान भी स्थानीय संस्कृति की अनूठी पहचान बनाते हैं।

5 **महेश्वरी वस्त्र और कारीगरी–** महेश्वर की पहचान महेश्वरी साड़ियों से भी है, जो यहाँ की पारंपरिक हथकरघा कारीगरी का प्रतीक हैं। इन साड़ियों की डिजाइन, रंग संयोजन और गुणवत्ता विश्व प्रसिद्ध है। यह कारीगरी रानी अहिल्याबाई के समय से चली आ रही है और आज भी महेश्वर की सांस्कृतिक पहचान में इसका अहम स्थान है।

सांस्कृतिक पर्यटन की अवधारणा और महेश्वर में उसकी स्थिति

1. **सांस्कृतिक पर्यटन की परिभाषा–** सांस्कृतिक पर्यटन वह प्रकार का पर्यटन है जिसमें पर्यटक किसी क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत, कला, स्थापत्य, रीति-रिवाज, परंपराएँ, भाषा, धार्मिक स्थल और ऐतिहासिक स्मारकों को जानने और अनुभव करने के उद्देश्य से यात्रा करता है। यह पर्यटन केवल स्थल दर्शन तक सीमित नहीं होता, बल्कि पर्यटक स्थानीय

समाज के जीवन में सहभागी बनने का प्रयास करता है।

विश्व पर्यटन संगठन (UNWTO) के अनुसार, 'सांस्कृतिक पर्यटन का तात्पर्य उस यात्रा से है, जिसका प्राथमिक उद्देश्य किसी क्षेत्र की संस्कृति को अनुभव करना है, जिसमें वास्तुकला, कला, ऐतिहासिक स्थल, त्योहार, हस्तशिल्प, संगीत, नृत्य और जीवनशैली शामिल है।'

2. **सांस्कृतिक पर्यटन का महत्व–** धरोहर संरक्षण को बढ़ावा, स्थानीय कारीगरों और कलाकारों को प्रोत्साहन, सास्कृतिक पहचान की पुनर्स्थापना, स्थानीय अर्थव्यवस्था में योगदान, सांस्कृतिक संवाद और सौहार्द को बढ़ावा

3. **महेश्वर में सांस्कृतिक पर्यटन की वर्तमान स्थिति–** महेश्वर, अपने समृद्ध इतिहास और सांस्कृतिक विविधता के बावजूद, अभी भी पर्यटक मानचित्र पर सीमित रूप से स्थापित है। यहाँ पर आने वाले पर्यटकों की प्राथमिकता धार्मिक अनुष्ठान, घाट दर्शन और किले भ्रमण तक सीमित रहती है। यद्यपि महेश्वर महेश्वरी वस्त्र, स्थापत्य, धार्मिक आस्था और रानी अहिल्याबाई के योगदानों के लिए प्रसिद्ध है, फिर भी सांस्कृतिक दृष्टि से इसके पर्यटन का समुचित विकास नहीं हुआ है।

पर्यटकों की संख्या– विगत वर्षों में नर्मदा परिक्रमा और स्थानीय त्योहारों के अवसर पर पर्यटक संख्या में वृद्धि देखी गई है, परंतु यह मौसमी होती है।

आधारभूत संरचना की स्थिति– पर्यटन स्थल तक पहुंचने की सुविधा सीमित हैय साथ ही पर्यटकों के लिए उचित सांस्कृतिक सूचना केंद्रों की भी कमी है।

प्रचार–प्रसार की कमी– महेश्वर की सांस्कृतिक विशेषताओं का राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रभावी प्रचार नहीं हो पा रहा है।

4. **स्थानीय समुदाय की भागीदारी–** महेश्वर के स्थानीय समुदायों में सांस्कृतिक परंपराएँ आज भी जीवित हैं, परंतु उन्हें पर्यटन से जोड़ने के लिए संगठित प्रयासों की कमी है। यदि हस्तशिल्प, पारंपरिक भोजन, स्थानीय नृत्य–संगीत और लोककथाओं को पर्यटन गतिविधियों में सम्मिलित किया जाए, तो सांस्कृतिक पर्यटन को नई दिशा दी जा सकती है।

धरोहर संरक्षण की स्थिति और चुनौतियाँ– महेश्वर, जो कि भारत की अमूल्य सांस्कृतिक धरोहरों में से एक है, आज संरक्षण के संदर्भ में कई गंभीर चुनौतियों से जूझ रहा है। यद्यपि यह नगर ऐतिहासिक, धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है, तथापि इसके धरोहर स्थलों की उपेक्षा, पर्यावरणीय दबाव और प्रशासनिक उदासीनता इसे संकट की ओर ले जा रही है।

1. **धरोहर स्थलों की वर्तमान स्थिति–** महेश्वर किलारू स्थापत्य की दृष्टि से अनुपम यह किला दीवारों में दरारें, क्षतिग्रस्त भाग और सफाई की कमी जैसी समस्याओं से ग्रस्त है।

अहिल्येश्वर और राजराजेश्वर मंदिर– धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण मंदिर, यद्यपि पूजा–अर्चना होती है, लेकिन संरचनात्मक संरक्षण की दृष्टि से सक्रिय प्रयास नगण्य हैं।

घाट क्षेत्र– पर्यटन का प्रमुख आकर्षण होने के बावजूद घाटों पर भीड़, गंदगी और अनियंत्रित निर्माणों से उनकी मौलिकता प्रभावित हो रही है।

2. **सरकारी और गैर–सरकारी प्रयास–** पुरातत्व विभाग द्वारा सीमित संरक्षणरू कुछ स्थलों को राष्ट्रीय धरोहर घोषित कर सीमित संरक्षण कार्य किए गए हैं, परंतु अनेक छोटे–मंझोले स्थल उपेक्षित हैं।

स्थानीय निकायों की सीमित भागीदारी– नगर पालिका और पर्यटन विभाग द्वारा स्वच्छता और विकास की कुछ योजनाएँ बनीं, परन्तु उनका कार्यान्वयन अपूर्ण है।

NGOऔर समाजसेवियों की भूमिका– कुछ गैर–सरकारी संस्थाओं द्वारा हथकरघा, महिला स्वसहायता समूह और सांस्कृतिक कार्यशालाओं के माध्यम से धरोहरों को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया जा रहा है।

3. **प्रमुख चुनौतियाँ:**

वित्तीय संकट– संरक्षण कार्यों के लिए पर्याप्त धन का अभाव है।

जन–जागरूकता की कमी– स्थानीय नागरिकों और पर्यटकों में धरोहर संरक्षण के प्रति अपेक्षित संवेदनशीलता नहीं है।

अवैध निर्माण और अतिक्रमण– धार्मिक और ऐतिहासिक स्थलों के पास अव्यवस्थित निर्माण कार्य धरोहर की मूल आत्मा को क्षति पहुँचा रहे हैं।

प्राकृतिक क्षरण– नर्मदा के किनारे स्थित होने के कारण जलवायु प्रभाव, नमी और वर्षा धरोहर स्थलों की दीवारों को क्षरण करते हैं।

पर्यटन का दुष्प्रभाव– अनियंत्रित पर्यटन गतिविधियाँ, ध्वनि और कचरा प्रदूषण, विरासत स्थलों की शांति और गरिमा को प्रभावित करते हैं।

4, **स्थानीय समुदाय और शिक्षा की भूमिका–** धरोहर संरक्षण के लिए केवल सरकारी प्रयास पर्याप्त नहीं होते। स्थानीय समुदायों, विद्यालयों, महाविद्यालयों और शोध संस्थानों की भागीदारी आवश्यक है। यदि महेश्वर के निवासी अपने अतीत की महत्ता को समझें और अपनी सांस्कृतिक जड़ों पर गर्व करें, तो वे संरक्षण प्रक्रिया के सक्रिय सहयोगी बन सकते हैं।

सांस्कृतिक पुनरुत्थान की संभावनाएँ– महेश्वर का अतीत अत्यंत गौरवशाली रहा है, किंतु वर्तमान में इसकी सांस्कृतिक छवि धूमिल होती जा रही है। ऐसे में यह अत्यंत आवश्यक है कि सांस्कृतिक पुनरुत्थान को एक सशक्त आंदोलन के रूप में देखा जाए, जिसमें धरोहर संरक्षण, लोककला संवर्धन और सांस्कृतिक आत्मबोध के तत्व समाहित हों।

1. **सांस्कृतिक पुनरुत्थान की आवश्यकता:**

सांस्कृतिक क्षरण की स्थिति– आधुनिकता और उपभोक्तावाद के प्रभाव में पारंपरिक कलाएँ, लोकगीत, महेश्वरी वस्त्र शिल्प और धार्मिक परंपराएँ लुप्त होने की कगार पर हैं।

पीढ़ियों के बीच सांस्कृतिक अंतर– नई पीढ़ी की रूचि अब तेजी से डिजिटल मीडिया की ओर बढ़ रही है, जिससे पारंपरिक सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ हाशिए पर जा रही हैं।

धरोहर स्थलों का उपेक्षित स्वरूप– जब तक सांस्कृतिक चेतना नहीं जागेगी, धरोहर स्थल केवल पत्थरों की संरचना बनकर रह जाएँगे।

2. **प्रमुख पुनरुत्थान संभावनाएँ:**

2.1 महेश्वरी वस्त्र उद्योग का संवर्धन– महेश्वर की हथकरघा परंपरा, विशेष रूप से महेश्वरी साड़ियों की बुनाई, सांस्कृतिक पहचान की वाहक है। यदि सरकार और गैर–सरकारी संस्थाएं इन कारीगरों को प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता और बाजार उपलब्ध करवाएँ, तो यह कला वैश्विक पहचान पा सकती है।

2.2 लोक कला और लोक संगीत का पुनर्जीवन– महेश्वर की लोक कथाएँ, नर्मदा अष्टक, और पारंपरिक वाद्ययंत्र अब बहुत कम सुनाई देते हैं। स्थानीय महाविद्यालयों और सांस्कृतिक केंद्रों में इन कलाओं को पढ़ाया जाए व युवा पीढ़ी को इससे जोड़ा जाए।

2.3 सांस्कृतिक उत्सवों और मेलों का आयोजन–वार्षिक महोत्सव, जैसे 'महेश्वर सांस्कृतिक महोत्सव', में स्थानीय कलाकारों, हस्तशिल्पियों और सांस्कृतिक समूहों को मंच प्रदान किया जाए, ताकि वे अपनी कला का

प्रदर्शन करें और आमजन को सांस्कृतिक बोध हो।

2.4 धार्मिक पर्यटन और आध्यात्मिक अनुभव– महेश्वर में धार्मिक दृष्टि से अनेक स्थल हैं। यदि इन्हें एक संरचित ध्धार्मिक पर्यटन परिपथष के रूप में विकसित किया जाए, तो पर्यटक सांस्कृतिक–आध्यात्मिक अनुभव प्राप्त कर सकेंगे। इसके लिए गाइडेड टूर, ऑडियो–विजुअल सामग्री और ध्यान केंद्रों की स्थापना सहायक होगी।

2.5 शैक्षिक संस्थानों की भागीदारी– स्थानीय स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में सांस्कृतिक पाठ्यक्रम, नाट्य कार्यशालाएँ, विरासत भ्रमण और शोध परियोजनाओं के माध्यम से छात्रों को संस्कृति से जोड़ा जा सकता है। इससे युवा वर्ग में स्थानीय गर्व और जिम्मेदारी की भावना विकसित होगी।

2.6 डिजिटल माध्यम से सांस्कृतिक प्रचार– डिजिटल प्लेटफॉर्म, सोशल मीडिया और वेबसाइटों के माध्यम से महेश्वर की सांस्कृतिक विशेषताओं का प्रचार–प्रसार किया जा सकता है। एक 'वर्चुअल महेश्वर म्यूजियम' भी बनाया जा सकता है, जहाँ पुरातात्विक वस्तुएँ, कथाएँ, गीत और चित्र उपलब्ध हों।

सांस्कृतिक पर्यटन के विकास हेतु प्रमुख रणनीतियाँ

1. पर्यटन अवसंरचना का सुदृढ़ीकरण:

यातायात सुविधा– सड़क, रेल और जलमार्ग को महेश्वर से बेहतर रूप में जोड़ा जाए।

आवास और सुविधा केंद्र– पर्यटकों के लिए विभिन्न श्रेणियों के होटल, धर्मशालाएँ, तथा सांस्कृतिक केंद्र विकसित किए जाएँ।

सूचना केंद्र– बहुभाषीय सांस्कृतिक सूचना केंद्रों की स्थापना की जाए जो पर्यटकों को ऐतिहासिक, धार्मिक और सांस्कृतिक जानकारी उपलब्ध कराएँ।

2. विरासत स्थलों का संरक्षण और प्रस्तुतिकरण– विरासत स्थलों की मरम्मत, सौंदर्यीकरण और तकनीकी संरक्षण के माध्यम से उन्हें और आकर्षक तथा सुरक्षित बनाया जाए।

ध्वनि–प्रकाश शो, डिजिटल गाइडिंग सिस्टम और फत कोड आधारित सूचना सेवाएँ शुरू की जा सकती हैं।

3. स्थानीय समुदाय को लाभ से जोड़ना– पर्यटन से जुड़ी नौकरियाँ (गाइड, शिल्प विक्रेता, प्रदर्शन कलाकार) स्थानीय नागरिकों को दी जाएँ। महिला स्वसहायता समूहों को स्थानीय भोजन, शिल्प, वेशभूषा और सांस्कृतिक गतिविधियों में जोड़ा जाए।

4. सांस्कृतिक गतिविधियों का स्थायित्व– मासिक या त्रैमासिक 'सांस्कृतिक सप्ताह'का आयोजन किया जाए, जिसमें शास्त्रीय संगीत, नृत्य, कथावाचन, शिल्प प्रदर्शन आदि हो।

महेश्वर के इतिहास और रानी अहिल्याबाई के जीवन पर आधारित नाट्य प्रस्तुतियाँ स्थानीय रंगमंच पर हों।

5. डिजिटल प्रचार और ब्रांडिंग– महेश्वर को 'इंडिया की सांस्कृतिक राजधानी' या 'नर्मदा की रानी' जैसे ब्रांड नामों से प्रचारित किया जाए।

एक समर्पित वेबसाइट, ऐप और सोशल मीडिया अभियान के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों तक पहुंच बनाई जाए।

6. शोध और नवाचार के अवसर– पर्यटन, संस्कृति और समाजशास्त्र के शोधार्थियों को महेश्वर में फील्ड वर्क और डॉक्युमेंटेशन का अवसर प्रदान किया जाए।

सांस्कृतिक इको–टूरिज्म की अवधारणा अपनाते हुए 'सस्टेनेबल टूरिज्म मॉडल– तैयार किया जा सकता है।

निष्कर्ष एवं अनुशंसाएँ

1. निष्कर्ष – महेश्वर भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिकता और इतिहास का जीवंत प्रतीक है। यहाँ की भौगोलिक स्थिति, धार्मिक महत्ता, ऐतिहासिक धरोहरें और पारंपरिक हस्तशिल्प इसे सांस्कृतिक पर्यटन के लिए उपयुक्त स्थल बनाते हैं। यद्यपि वर्तमान में यहाँ सांस्कृतिक पर्यटन की गतिविधियाँ सीमित रूप में संचालित हो रही हैं, परंतु इस क्षेत्र में अनंत संभावनाएँ विद्यमान हैं।

धरोहर संरक्षण की दिशा में कुछ प्रयास अवश्य हुए हैं, किंतु वे अभी भी अपर्याप्त हैं। वहीं, सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए स्थानीय समुदाय, शैक्षिक संस्थाएँ, सरकार और गैर–सरकारी संगठनों की सामूहिक भागीदारी आवश्यक है। यदि सुनियोजित रणनीतियों के साथ महेश्वर में सांस्कृतिक पर्यटन को विकसित किया जाए, तो यह न केवल स्थानीय विकास का साधन बनेगा, अपितु भारत की सांस्कृतिक गरिमा को वैश्विक पटल पर स्थापित करने का माध्यम भी बनेगा।

2 अनुशंसाएँ:

2.1. धरोहर स्थलों का वैज्ञानिक संरक्षण– महेश्वर के प्रमुख ऐतिहासिक और धार्मिक स्थलों का संरक्षण विशेषज्ञों की देखरेख में किया जाए, जिससे उनकी मूल संरचना और सांस्कृतिक मूल्य सुरक्षित रहें।

2.2. स्थानीय समुदाय का प्रशिक्षण और सहभागिता–स्थानीय युवाओं, महिलाओं और कारीगरों को पर्यटन संचालन, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और गाइड सेवाओं के लिए प्रशिक्षित किया जाए।

2.3. महेश्वरी वस्त्र उद्योग को प्रोत्साहन–महेश्वरी साड़ियों और हथकरघा शिल्प को GI टैग जैसी मान्यता देकर अंतरराष्ट्रीय बाजार में पहुँचाने के प्रयास हों।

2.4. सांस्कृतिक महोत्सवों का नियमित आयोजन– वार्षिक/मासिक महोत्सवों में सांस्कृतिक प्रदर्शन, कारीगरी, नृत्य, संगीत, पारंपरिक भोजन और लोककथाओं का मंचन किया जाए।

2.5. डिजिटल प्रचार तंत्र का विकास–महेश्वर की सांस्कृतिक विशेषताओं को डिजिटल माध्यम से प्रचारित करने के लिए वेबसाइट, मोबाइल ऐप, सोशल मीडिया कैंपेन और वर्चुअल टूर जैसी सेवाएँ विकसित की जाएँ।

2.6. पर्यटन नीति में महेश्वर को प्राथमिकता– राज्य सरकार की पर्यटन नीति में महेश्वर को एक विशेष सांस्कृतिक पर्यटन परिपथ के रूप में सम्मिलित कर, योजनाबद्ध निवेश किया जाए।

2.7. शोध व प्रलेखन केंद्र की स्थापना– एक स्थायी 'महेश्वर संस्कृति शोध केंद्र' की स्थापना हो, जहाँ ऐतिहासिक दस्तावेज, मौखिक परंपराएँ, चित्रकला और संगीत का संकलन किया जाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. 'भारतीय लोक संस्कृति' – डॉ. नामवर सिंह, प्रकाशन वर्ष: 2005, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. 'संस्कृति और पर्यटन' – डॉ. अजय सोनी, प्रकाशन वर्ष: 2012, पुस्तक मंदिर, जयपुर।
3. 'धरोहर संरक्षण: सिद्धांत और व्यवहार' – प्रो. ए. के. जैन, प्रकाशन वर्ष: 2018, इंडियन हेरिटेज फाउंडेशन, दिल्ली।
4. 'महेश्वरी वस्त्र शिल्प: परंपरा और समकालीनता' – डॉ. श्वेता

अग्रवाल, प्रकाशन वर्ष: 2021, हस्तकला अध्ययन संस्थान, इंदौर।
5. 'भारतीय सांस्कृतिक पर्यटन' – डॉ. किरण जोशी, प्रकाशन वर्ष: 2016, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, वाराणसी।
6. 'रानी अहिल्याबाई होलकर: जीवन और कार्य' – डॉ. रामशंकर त्रिपाठी, प्रकाशन वर्ष: 2010, नर्मदा प्रकाशन, भोपाल।
7. 'नर्मदा अंचल की सांस्कृतिक विरासत' – डॉ. सुरेश चौरे, प्रकाशन वर्ष: 2014, संस्कृति प्रतिष्ठान, जबलपुर।
8. ''Tourism and Cultural Heritage in India" – Prof. Manoj Dixit, Publication Year: 2019, Gyan Publishing House, New Delhi.
9. 'सांस्कृतिक नवजागरण और भारत' – डॉ. अरविंद श्रीवास्तव, प्रकाशन वर्ष: 2009, प्रकाशन विद्या निकेतन, पटना।
10. 'मध्यप्रदेश का सांस्कृतिक वैभव' – म.प्र. राज्य संस्कृति संचालनालय, प्रकाशन वर्ष: 2020, मध्यप्रदेश शासन प्रकाशन विभाग, भोपाल।

****